सुरेश सती
प्रधानाध्यापक
राजकीय जूनियर हाई स्कूल
पिंगलो, बागेश्वर

सुरेश सती व उनकी टीम का कमाल

सहायक अध्यापक – दीप चन्द्र पांडे
सी.आर.सी.सी. – केवलानंद पाण्डे
भोजनमाता – रमोती, गोदा व कमला देवी
नामांकन – 102

गरूड – ग्वालदम मोटर मार्ग पर ब्लॉक संसाधन केन्द्र गरुड़ से 22 किमी. आगे एक लिंक रोड निकलती है। इसी पर 10 किमी. आगे स्थित है राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पिंगलों। पिंगलों घाटी का यह उच्च प्राथमिक विद्यालय सड़क से 200 मीटर ऊपर एक धार में स्थित है। विद्यालय करीब 300 मीटर लम्बी चारदीवारी से घिरा है। अच्छा सा स्वागत द्वार बना हुआ है। द्वार के दोनों तरफ सफेद छोटे कंकड़ों से फूलों की क्यारियों को सजाया गया है। एक तरफ बड़े ही कलात्मक तरीके से लिखा है 'स्वागतम्।' विद्यालय पहुंचा तो देखा कि बच्चे सर्दी की गुनगुनी धूप का मजा लेते हुये मैदान में चार–चार के समूह में बैठे हैं। कुछ समूह चार्ट पेपर पर लेखन कार्य कर रहे हैं और कुछ बातचीत में मगन हैं। एक समूह से पता किया तो मालूम हुआ कि बच्चे समूह कार्य कर रहे हैं। इसके तुरन्त बाद बारी–बारी से प्रस्तुतीकरण होगा। यानि खोज–बीन विधि और प्रस्तुतीकरण का यह सत्र रोजाना चलता है। बाल समूह प्रस्तुतीकरण की तैयारियों में व्यस्त थे। गांव के उच्च शिखर पर बना पिंगलों स्कूल आज जैसा दिखता है, यह आज से पांच साल पूर्व ऐसा नहीं था। एक ही भवन था यहां, बच्चों की संख्या भी चालीस के आस–पास ही थी। दो शिक्षक थे। शिक्षक सुरेश सती और उनके साथी शिक्षको ने ऐसा क्या किया कि आज 150 से अधिक बच्चे यहां अध्ययनरत हैं और चार भवन स्कूल की सम्पत्ति के रूप में खड़े हैं? विद्यालय के पास काफी ज़मीन है। 300 मीटर से अधिक लम्बी चारदीवारी बन चुकी है। गांव के लोग विद्यालय में

आते–जाते रहते हैं। बच्चों के साथ वक्त बितातें हैं। विद्यालय का नाम सबकी जुबां पर रहता है। कैसे हुआ यह सब? यह सब हासिल करने के लिए शिक्षक किन प्रक्रियाओं से गुजरे होंगे ? इन सवालों के जवाब मुझे कई बार स्कूल जाने के बाद ही मिल पाए।

स्वभाव से खुश मिजाज और हर वक्त बच्चों के साथ मिलकर काम करने की शिक्षकों की इच्छा ही है कि आज राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पिंगलों ब्लॉक ही नहीं अपितु राज्य में भी सम्मान का हकदार बना है। इस विद्यालय को राज्य स्तरीय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार मिल चुका है। यह पिंगलों क्षेत्र के नागरिकों, यहां के विद्यार्थियों और शिक्षा से जुड़े लोगों के लिए गर्व का विषय है। कोई शिक्षक कैसे बहुत सी चुनौतियों से पार पाता हुआ बच्चों के मन पढ़ लेता है, उनके मुद्दों को समझ लेता है तथा बच्चों की समझ को व्यापक फलक पर लाने के लिए ईमानदार प्रयत्न करता है इस बात को समझने के लिए मैं कई बार इस विद्यालय के भ्रमण के लिए गया। हर बार मुझे कुछ नई बात समझ में आती। एक दिन विद्यालय में अभिभावकों की बैठक थी। स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्य भी मौजूद थे। मसला था विद्यालय के वार्षिक समारोह कार्यक्रम में अभिभावकों का सहयोग तथा उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना। मेरे ऐसे कुछ अनुभव रहे

हैं जिसमें शिक्षक कहते हैं कि अभिभावक तो मीटिंग में आते ही नहीं। लेकिन मेरी यह मान्यता तो पिंगलों में आते ही निर्मूल साबित हो गई। पूरा फील्ड खचा–खच भरा था। 140 के आस–पास लोग एकत्र थे। ग्राम प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्य सहित स्कूल प्रबंधन समिति कमेटी के अध्यक्ष भी मीटिंग में मौजूद थे। खूब गहमा–गहमी थी। महिलाएं अधिक हैं पुरूष क्यों नहीं आते जैसे सवाल भी दबे पांव बैठक में आ ही रहे थे। लेकिन शिक्षकों के चेहरे पर शिकन तक न थी। शिक्षक सुरेश बड़े सहज भाव से बैठक का संचालन करते रहे। बैठक में तय हुआ कि वार्षिक समारोह के लिए अभिभावकों का हर सम्भव प्रयास रहेगा। वह भी कुछ कार्यक्रमों में प्रतिभाग करेंगे।

एक दिन सुबह मैं तड़के ही विद्यालय पहुंच गया। प्रातःकालीन सभा से पूर्व चार अभिभावक भी स्कूल में दिखे। मैंने पूछा आप लोग इस वक्त स्कूल में कैसे ? उन्होंने बताया कि हमने एक समूह बनाया है। प्रतिदिन बारी–बारी से विद्यालय की स्वच्छता के लिए हम बच्चों की मदद करते हैं। प्रार्थना सभा में शामिल होते हैं। बच्चों की पढ़ाई–लिखाई कैसी चल रही है यह देखते हैं और शिक्षक से उनकी प्रगति के बारे में, आदतों के बारे में बात करते हैं। यानी अभिभावकों का नजदीकी रिश्ता विद्यालय और शिक्षकों के साथ जुड़ा है। यह तो है स्कूल और समुदाय के सहज रिश्तों की बात। इस विद्यालय में एक और बात देखी– कक्षा 8 से पास होकर जाने वाले विद्यार्थी के नाम का एक गमला यहां लगा है जिसमें एक फूल का पौधा लगाया गया है। उपहार से मिले ऐसे गमलों में बच्चों का नाम गमले में लिखा जाता है। इसके साथ स्कूल से पास आउट बच्चे पढ़ रहे बच्चों के साथ विद्यालय के आस–पास की जगह में पौधा रोपण भी करते हैं। पढ़ रहे विद्यार्थी इन पौधों की नियमित देख–रेख करते हैं। विद्यालय में प्रत्येक बच्चे की ईमेल आईडी बनी है। एक बड़ा एलसीडी टीवी एक हॉल में लगा है जिसका उपयोग इंटरनेट तथा फिल्म शो आदि में किया जाता हैं। शिक्षक ने पहले दो बच्चों को स्वयं प्रदर्शित किया। अब यह दो बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर अन्य साथियों को कम्प्यूटर सीखने में मदद करते हैं। मिलकर सीखने का यह प्रयोग तकनीक के अलावा अन्य विषयों में भी

कारगर हो सकता है। इसकी बानगी भी पिंगलौं स्कूल में बखूबी दिखी। कक्षा–कक्ष में बहुत सहज माहौल दिखा। बच्चे आपस में गपियाते और एक–दूसरे से सवालों के हल पूछते नजर आये। कोई अटकता तो उसे अलग–बगल में बैठा कोई छात्र मदद कर देता। इस तरह की आदतों का विकास कैसे होता होगा ? शिक्षक बताते हैं कि उनको भी शुरू में दिक्कतों का सामना करना पड़ा। बच्चों को भय मुक्त वातावरण में अपनी बात कहने का मौका दिया और उनके अभिभावकों को स्कूल में उचित सम्मान दिया। बच्चों की स्कूली प्रगति के साथ–साथ उनके व्यवहारगत बदलावों पर भी नजर रखी। इसलिए अभिभावकों का भी विश्वास जगा। शिक्षक सुरेश सती ने बताया कि अकेले उनके दम पर कोई बड़ा परिवर्तन कैसे हो सकता था, इसलिए अपने सहयोगी शिक्षक साथियों का यथासम्भव सहयोग लेने से वह कभी नहीं चूके। आपस में बहुत अच्छा समन्वय यहां शिक्षकों के बीच दिखा। कोई कार्यक्रम संचालित करना हो, बच्चों को किसी कार्यक्रम की तैयारी करवानी हो, किसी शिक्षक की गैर मौजूदगी में कक्षा–कक्ष गतिविधि हो या अन्य विद्यालयी कार्यक्रम सभी में शिक्षकों का पूर्ण सहयोग रहता है। आपसी समन्वय के इस माहौल को बच्चे भी महसूस करते हैं।

बच्चों का प्रतिभाग सभी तरह के विद्यालयी कार्यक्रमों में सी.आर.सी. से राज्य स्तर तक रहता है। सुरेश सती के प्रयासों से 'स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम' में विद्यालय को राज्य पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

किसी भी विद्यालय की पहचान बच्चों की बातचीत से भी काफी हद तक हो जाती है। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सुधीर, कैलाश काण्डपाल, राजीव शर्मा एक भ्रमण के लिए रा.उ.प्रा.वि. पिंगलों पहुंचे। कैलाश

काण्डपाल बच्चों के समूह से बात–चीत कर रहे थे। गोल घेरे में बैठकर पहले परिचय हुआ, फिर बच्चों ने बात–चीत के दौरान कैलाश जी से कुछ सवाल पूछे – जैसे आपने फाउण्डेशन क्यों ज्वाइन किया? कौन से स्कूल को आप अच्छा मानते हो? बच्चों के साथ काम करने में आपको क्यों अच्छा लगता है ? आपने कितने स्कूल में भ्रमण किया है आदि। कक्षा सात, आठ, और छह के बच्चों ने प्रश्न किये थे। ऐसा नहीं लग रहा था कि बच्चे किसी आगंतुक से पहली बार मिल रहे हैं। इसका मतलब हुआ कि बच्चों को कक्षा में सवाल–जवाब के खूब अवसर मिलते हांगे। बच्चों के अन्दर प्रश्न करने की क्षमता बढ़े, बच्चे अपने सवालों को रख सकें, उनकी जिज्ञासा कभी रुके नहीं। एक शिक्षक इतनी चीजें बच्चों के अन्दर पैदा कर दे। इसी ध्येय को पूरा करने में सुरेश सती जुटे हैं। बात–चीत के दौरान कक्षा 8 के बच्चों ने बताया कि 'कोट नन्दाष्टमी मेला 2015 में मुख्यमंत्री के सामने मंच पर नंदा राज जात गीत की प्रस्तुति दी तो मुख्यमंत्री भी देवी का डोला थाम कर खुद को थिरकने से नहीं रोक पाये।' इस कार्यक्रम में बच्चों को प्रथम स्थान मिला। स्थानीय मेलों व सपनों की उड़ान कार्यक्रम में भी विद्यालय के बच्चों ने उक्त गीत–नाटिका का रोचक प्रदर्शन किया है। विद्यालय को प्रदेश स्तर पर कई पुरस्कार मिल चुके हैं। बच्चों का आत्मविश्वास कक्षा–कक्षीय गतिविधियों के अलावा कक्षा के बाहर की दुनिया में भी कैसे बढ़ता है, बच्चों के उक्त बयान में साफ झलकता है। इसी बीच एक बच्ची ने कहा कि हम किसी से भी नहीं घबराते। पहले बहुत घबराहट होती थी, कक्षा में प्रश्न पूछते हुए भी डर लगता था। लेकिन टीचर ने हमसे कहा कि सवाल तो सवाल होता है इसमें अच्छा या बुरा जैसा कुछ नहीं होता। इसलिए सीखने–समझने की पहली शर्त यही है कि हम खुल कर बोलें। शायद इसी बात को बच्चों ने मूल मंत्र मान लिया था। इसका परिणाम स्पष्ट रूप से बच्चों की बिंदास बातों के रूप में दिख रहा था।

विद्यालयी शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय स्तर पर शैक्षिक भ्रमण प्रतिवर्ष कराया जाता है। भ्रमण के बाद बच्चों को भ्रमण के अनुभव दीवार पत्र में लिखने होते हैं। बच्चों को डायरी

लेखन के लिए भी प्रेरित किया जाता है।

विद्यालयी गतिविधियों में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान साप्ताहिक समर कैम्प आयोजित किया जाता है। इस कैम्प में बच्चे स्वैच्छिक रूप से प्रतिभाग करते हैं। प्रातः 9 से दोपहर 2 बजे तक कैम्प में विभिन्न रचनानात्मक गतिविधियां आयोजित होती हैं। थियेटर, रचनात्मक लेखन, मिट्टी के बर्तन बनाना, पेपर क्राफ्ट, मुखौटे बनाना आदि। कैम्प के समापन पर एक प्रदर्शन कार्यक्रम भी विद्यालय में किया जाता है। इस तरह के प्रयासों में बच्चों को बहुत मजा आता है। समुदाय के लोग विद्यालय से जुड़ते हैं। अन्य विद्यालयों के शिक्षकों के लिए भी यह एक अवसर होता है। वह भी स्वैच्छिक रूप से कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हैं।

स्वच्छता के प्रति विद्यालय के शिक्षक बहुत संवेदनशील हैं। यहां हर बच्चे का अलग तौलिया है। विद्यालयी स्वच्छता के अलावा बच्चे अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूक हैं। प्रत्येक कक्षा में एक डस्टबिन रखा रहता है। विद्यालय के आस–पास कहीं भी प्लास्टिक रैपर या कागज के टुकड़े नहीं बिखरे रहते। अभिभावकों का भी इस विद्यालय में स्वच्छता अभियान के लिए बड़ा योगदान रहा है। शिक्षकों ने स्थानीय विधायक व सांसद को विद्यालय भवन निर्माण में सहयोग करने को प्रेरित किया है। फलतः विधायक व सांसद निधि से भवन बनाने में आर्थिक मदद मिली। विधायक व सांसद निधि का उपयोग शिक्षकों ने विद्यालय भवन बनवाने में किया है।

रा.उ.प्रा.वि. पिंगलों में स्कूल प्रबंधन समिति की बैठकें नियमित रूप से होती हैं। अभिभावकों द्वारा विद्यालय को आर्थिक और अन्य संसाधनों से हमेशा सहयोग किया जाता है। बच्चों की बॉक्स फाइलें व्यवस्थित हैं और बालसभा नियमित रूप से होती है।

(सुरेश सती से हुई बिपिन जोशी की बातचीत पर आधारित)